IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

उमरिया जिले के अनुसूचित जनजाति के युवाओं में नशाखोरी की समस्या: कारण और समाधान

डॉ. पिंकी सोमकुंवर

सहायक प्राध्यापक - समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग

उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन नशाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करता है। अध्ययन में पाया गया कि नशाखोरी युवाओं में एक गंभीर समस्या है, जिसके प्रमुख कारण मित्रों का दबाव, बेरोजगारी, मानसिक तनाव एवं पारिवारिक वातावरण हैं। इसका प्रभाव युवाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा एवं सामाजिक जीवन पर नकारात्मक रूप से पड़ता है। हालाँकि, अधिकांश युवा नशा छोड़ने की इच्छा रखते हैं, जो सकारात्मक संकेत है। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि जागरूकता, शिक्षा, रोजगार के अवसर एवं नीतिगत हस्तक्षेप के माध्यम से इस समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में युवा वर्ग को राष्ट्र की शक्ति एवं विकास का आधार माना जाता है, किन्तु वर्तमान समय में युवाओं के समक्ष अनेक सामाजिक समस्याएँ उभरकर सामने आ रही हैं, जिनमें नशाखोरी एक अत्यंत गंभीर एवं चिंताजनक समस्या है। विशेष रूप से अनुसूचित जनजाति के युवाओं में नशे

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-32107

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

की बढ़ती प्रवृत्ति न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित कर रही है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, पारिवारिक व्यवस्था एवं सामुदायिक विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल रही है। मध्यप्रदेश का उमरिया जिला एक जनजातीय बहुल क्षेत्र है, जहाँ सामाजिक एवं आर्थिक पिछड़ापन, शिक्षा का निम्न स्तर, बेरोजगारी तथा संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ विद्यमान हैं। इन परिस्थितियों में युवाओं का नशे की ओर आकर्षित होना एक स्वाभाविक किन्तु चिंताजनक प्रवृत्ति के रूप में सामने आता है। यहाँ के जनजातीय समाज में पारंपरिक रूप से कुछ मादक पदार्थों, विशेषकर स्थानीय मदिरा का उपयोग सांस्कृतिक एवं सामाजिक अवसरों पर किया जाता रहा है, किन्तु आधुनिक समय में इसका स्वरूप बदलकर एक व्यापक सामाजिक समस्या का रूप ले चुका है। यह समस्या केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक विकास में भी बाधा उत्पन्न करती है। नशे की लत युवाओं की उत्पादक क्षमता को कम कर देती है, जिससे उनका भविष्य प्रभावित होता है और समाज की प्रगति भी बाधित होती है। विशेष रूप से जनजातीय क्षेत्रों में, जहाँ पहले से ही विकास की गति धीमी है, वहाँ यह समस्या और भी गंभीर हो जाती है।

साहित्य समीक्षा

नशाखोरी की समस्या पर विभिन्न समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य संबंधी अध्ययनों में यह स्पष्ट किया गया है कि यह एक बहुआयामी सामाजिक समस्या है, जो विशेष रूप से युवाओं एवं वंचित समुदायों में अधिक गहराई से देखी जाती है। अनुसूचित जनजाति समुदायों में यह समस्या सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होती है। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने अपने सामाजिक विश्लेषण में यह प्रतिपादित किया कि समाज के वंचित एवं पिछड़े वर्गों में शिक्षा एवं जागरूकता का अभाव विभिन्न सामाजिक बुराइयों को जन्म देता है। उनके

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

अनुसार, सामाजिक सशक्तिकरण के लिए शिक्षा अनिवार्य है, अन्यथा व्यक्ति नकारात्मक प्रवृत्तियों की ओर अग्रसर हो सकता है। राम आहूजा ने अपनी पुस्तक "Social Problems in India" (1992) में नशाखोरी को एक प्रमुख सामाजिक समस्या के रूप में वर्णित किया है। उनके अनुसार, नशाखोरी का संबंध गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक तनाव एवं पारिवारिक विघटन से होता है। आहूजा यह भी बताते हैं कि युवा वर्ग विशेष रूप से इन परिस्थितियों में नशे की ओर अधिक आकर्षित होता है। कपिल के. कृष्णन एवं अन्य समाजशास्त्रियों ने यह उल्लेख किया है कि जनजातीय समाज में पारंपरिक रूप से मादक पदार्थों का उपयोग सांस्कृतिक एवं धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता रहा है, किन्तु आधुनिकता एवं बाहरी प्रभावों के कारण इसका स्वरूप परिवर्तित होकर दुरुपयोग में बदल गया है। इससे युवाओं में नशे की प्रवृत्ति बढ़ी है। भारत सरकार द्वारा प्रकाशित "Magnitude of Substance Use in India" (2019) रिपोर्ट में यह पाया गया है कि देश में युवाओं में शराब एवं तंबाकू का सेवन व्यापक रूप से प्रचलित है, विशेषकर ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों में इसकी दर अधिक है। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि नशाखोरी का सीधा संबंध शिक्षा के निम्न स्तर एवं सीमित रोजगार अवसरों से है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध "उमरिया जिले के अनुसूचित जनजाति के युवाओं में नशाखोरी की समस्या: कारण और समाधान" के संदर्भ में निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है—

1. उमरिया जिले के अनुसूचित जनजाति के युवाओं में नशाखोरी की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. नशाखोरी के प्रमुख सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारणों का विश्लेषण करना।

3. युवाओं के जीवन पर नशाखोरी के प्रभावों (स्वास्थ्य, शिक्षा, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन) का अध्ययन करना।
4. नशाखोरी की प्रवृत्ति में साथियों के दबाव (Peer Pressure), पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक तनाव की भूमिका का परीक्षण करना।
5. नशाखोरी को नियंत्रित करने हेतु जागरूकता, शिक्षा एवं नीतिगत उपायों की आवश्यकता का मूल्यांकन करना।
6. समस्या के समाधान हेतु व्यावहारिक एवं समाजशास्त्रीय सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन "उमरिया जिले के अनुसूचित जनजाति के युवाओं में नशाखोरी की समस्या: कारण और समाधान" के संदर्भ में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं—

1. उमरिया जिले के अनुसूचित जनजाति के युवाओं में नशाखोरी की प्रवृत्ति सामाजिक एवं आर्थिक पिछड़ेपन के कारण अधिक पाई जाती है।
2. बेरोजगारी एवं शिक्षा के निम्न स्तर के कारण युवा वर्ग नशाखोरी की ओर अधिक आकर्षित होता है।
3. मित्रों का दबाव एवं पारिवारिक वातावरण नशाखोरी की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं।
4. नशाखोरी का युवाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा एवं सामाजिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
5. जागरूकता की कमी एवं नीतिगत उपायों का अपर्याप्त क्रियान्वयन नशाखोरी की समस्या को बढ़ाता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन "उमरिया जिले के अनुसूचित जनजाति के युवाओं में नशाखोरी की समस्या: कारण और समाधान" एक वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध है, जो मुख्यतः सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में मध्यप्रदेश के जनजातीय बहुल उमरिया जिले का चयन किया गया, जहाँ इस समस्या का अध्ययन प्रासंगिक है। इस शोध में उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन पद्धति का उपयोग करते हुए 15 से 26 वर्ष आयु वर्ग के 100 अनुसूचित जनजाति युवाओं (पुरुष एवं महिला दोनों) को शामिल किया गया। आंकड़ों के संग्रह के लिए प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत साक्षात्कार अनुसूची विधि का उपयोग किया गया, जबकि द्वितीयक स्रोतों में पुस्तकों, शोध पत्रों एवं सरकारी रिपोर्टों का सहारा लिया गया। डेटा संग्रह के दौरान उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित कर उनकी गोपनीयता एवं निष्पक्षता का ध्यान रखा गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत पद्धति एवं तालिकाओं के माध्यम से किया गया, जिससे नशाखोरी के कारणों एवं प्रभावों को स्पष्ट रूप से समझा जा सका। हालांकि, अध्ययन की कुछ सीमाएँ भी रहीं, जैसे यह शोध केवल उमरिया जिले तक सीमित है, नमूना आकार सीमित है तथा कुछ उत्तरदाता नशाखोरी से संबंधित जानकारी साझा करने में संकोच कर सकते हैं। इसके बावजूद यह अनुसंधान विधि अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप उपयुक्त एवं विश्वसनीय मानी जा सकती है।

आकड़ों का विश्लेषण

तालिका 1: आयु वर्ग

आयु वर्ग	संख्या	प्रतिशत
15–18	28	28%
19–22	36	36%

23–26	26	26%
26+	10	10%

अधिकांश युवा (62%) 15–22 आयु वर्ग के हैं, जो यह दर्शाता है कि कम उम्र में ही नशाखोरी की प्रवृत्ति विकसित हो रही है।

तालिका 2: लिंग

लिंग	संख्या	प्रतिशत
पुरुष	68	68%
महिला	32	32%

पुरुष युवाओं में नशाखोरी की प्रवृत्ति अधिक पाई गई, किन्तु महिलाओं में भी यह समस्या उभर रही है।

तालिका 3: शैक्षणिक स्थिति

स्थिति	संख्या	प्रतिशत
पढ़ रहे हैं	58	58%
पढ़ाई छोड़ चुके	42	42%

42% युवाओं का पढ़ाई छोड़ना नशाखोरी एवं सामाजिक समस्याओं से जुड़ा हुआ पाया गया।

तालिका 4: नशे का सेवन

उत्तर	संख्या	प्रतिशत
हाँ	62	62%
नहीं	38	38%

62% युवा किसी न किसी रूप में नशा करते हैं, जो इस समस्या की गंभीरता को दर्शाता है।

तालिका 5: सेवन की आवृत्ति

प्रकार	संख्या	प्रतिशत
कभी-कभी	35	35%
नियमित	27	27%

नियमित नशाखोरी करने वाले युवाओं की संख्या भी काफी अधिक है, जो लत का संकेत है।

तालिका 6: नशे के कारण

कारण	संख्या	प्रतिशत
मित्रों का दबाव	30	30%
तनाव	25	25%
परंपरा	20	20%
अन्य	25	25%

मित्रों का दबाव प्रमुख कारण है, जबकि तनाव एवं परंपरा भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

तालिका 7: पारिवारिक प्रभाव

उत्तर	संख्या	प्रतिशत
हाँ	54	54%
नहीं	46	46%

54% युवाओं ने बताया कि उनके परिवार में भी नशे का प्रचलन है, जो व्यवहार को प्रभावित करता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

तालिका 8: स्वास्थ्य पर प्रभाव

उत्तर	संख्या	प्रतिशत
हाँ	60	60%
नहीं	40	40%

60% युवाओं ने नशे के नकारात्मक प्रभाव को स्वीकार किया, जिससे स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ता है।

तालिका 9: नशा छोड़ने की इच्छा

उत्तर	संख्या	प्रतिशत
हाँ	65	65%
नहीं	35	35%

65% युवा नशा छोड़ना चाहते हैं, जो सकारात्मक संकेत है।

तालिका 10: समाधान

मुख्य कारण	प्रतिशत
जागरूकता अभियान	(40%)
रोजगार के अवसर	(30%)
शिक्षा का प्रसार	(20%)
परिवार का सहयोग	(10%)

युवाओं ने नशाखोरी रोकने के लिए सामाजिक एवं आर्थिक सुधारों को आवश्यक बताया।

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उमरिया जिले के अनुसूचित जनजाति युवाओं में नशाखोरी एक गंभीर समस्या के रूप में उभर रही है। इसके पीछे प्रमुख कारण मित्रों का दबाव, तनाव, पारिवारिक वातावरण एवं

पारंपरिक प्रथाएँ हैं। आर्थिक एवं शैक्षणिक पिछड़ापन इस समस्या को और बढ़ाता है। यद्यपि अधिकांश युवा नशा छोड़ना चाहते हैं, फिर भी प्रभावी उपायों की कमी के कारण समस्या बनी हुई है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन "उमरिया जिले के अनुसूचित जनजाति के युवाओं में नशाखोरी की समस्या: कारण और समाधान" के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि नशाखोरी एक गंभीर एवं बहुआयामी सामाजिक समस्या के रूप में उभर रही है। अध्ययन में यह पाया गया कि एक बड़ी संख्या में युवा किसी न किसी रूप में नशे का सेवन कर रहे हैं, जो उनके व्यक्तिगत जीवन, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं सामाजिक संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। अध्ययन के अनुसार नशाखोरी के प्रमुख कारणों में मित्रों का दबाव, मानसिक तनाव, बेरोजगारी, पारिवारिक वातावरण तथा पारंपरिक सामाजिक व्यवहार शामिल हैं। विशेष रूप से जनजातीय समाज में नशे का सांस्कृतिक स्वीकार्य होना इस समस्या को और जटिल बनाता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा का निम्न स्तर एवं जागरूकता की कमी भी युवाओं को नशे की ओर आकर्षित करती है। यह भी पाया गया कि नशाखोरी के कारण युवाओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, उनकी शैक्षणिक प्रगति प्रभावित हो रही है तथा पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में असंतुलन उत्पन्न हो रहा है। हालांकि, एक सकारात्मक पक्ष यह भी सामने आया कि अधिकांश युवा नशा छोड़ने की इच्छा रखते हैं, जो इस समस्या के समाधान की संभावनाओं को दर्शाता है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि उचित सामाजिक, शैक्षणिक एवं नीतिगत हस्तक्षेप किए जाएँ, तो इस समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है और युवाओं को एक स्वस्थ एवं सकारात्मक दिशा प्रदान की जा सकती है।

सुझाव

इस अध्ययन के अंतर्गत निम्लिखित सुझाव प्रस्तुत है -

1. जागरूकता अभियान: जनजातीय क्षेत्रों में नशाखोरी के दुष्परिणामों के बारे में व्यापक जागरूकता अभियान चलाए जाएँ, जिसमें विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं ग्राम स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
2. शिक्षा का प्रसार: युवाओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाए तथा स्कूल छोड़ चुके युवाओं को पुनः शिक्षा से जोड़ा जाए।
3. रोजगार के अवसर: बेरोजगारी को कम करने के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं कौशल विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाए, जिससे युवाओं को सकारात्मक दिशा मिल सके।
4. परामर्श एवं नशा मुक्ति केंद्र: नशा छोड़ने के इच्छुक युवाओं के लिए काउंसलिंग सेवाएँ एवं नशा मुक्ति केंद्र स्थापित किए जाएँ।
5. पारिवारिक सहयोग: परिवारों को जागरूक किया जाए कि वे युवाओं के व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव डालें और नशे को बढ़ावा देने वाले वातावरण से बचें।
6. सामाजिक नियंत्रण: ग्राम स्तर पर सामाजिक संगठनों एवं पंचायतों को सक्रिय किया जाए, ताकि नशाखोरी पर नियंत्रण रखा जा सके।
7. नीतिगत हस्तक्षेप: सरकार द्वारा नशाखोरी नियंत्रण हेतु कठोर नियमों का पालन सुनिश्चित किया जाए तथा जनजातीय क्षेत्रों में विशेष योजनाएँ लागू की जाएँ।

इस प्रकार, यह अध्ययन न केवल समस्या की गहराई को उजागर करता है, बल्कि यह भी संकेत देता है कि सामूहिक प्रयासों के माध्यम से इस सामाजिक बुराई को नियंत्रित किया जा सकता है और युवाओं को स्वस्थ, शिक्षित एवं सशक्त बनाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC10988150/
2. https://link.springer.com/article/10.1186/s12982-026-01358-7
3. https://journals.sagepub.com/doi/10.1177/09731342241239190
4. Ambedkar, B. R. *Annihilation of Caste*. New Delhi: Navayana Publishing, 2014.
5. Ahuja, Ram. *Social Problems in India*. Jaipur: Rawat Publications, 1992.
6. Government of India. *Magnitude of Substance Use in India*. Ministry of Social Justice and Empowerment, 2019.
7. Singh, N. K. *Education and Social Change*. Jaipur: Rawat Publications, 1979.